ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा

अनुदानित

लघु शोध प्रकल्प

(Minor Research Project)

2009-2011

सिंधी कवियों का हिन्दी काव्य सृजन में योगदान

मुख्य अनुसंधानकर्ती

डॉ. वंदना दीक्षित

सहायक अनुसंधानकर्ती

डॉ. उमा त्रिपाठी

मार्गदर्शन

प्राचार्य डॉ. वंदना खुशालानी

हिन्दी विभाग

दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय

जरीपटका नागपुर.

उद्देश्य

1. इस विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है ।
2. सिंधी कवियों के लिये शहर में खास संगठन या मंच उपलब्ध नहीं है ।
3. हिंदी सेवा करनेवाले ऐसे कितने सिंधी कवि है इनकी जानकारी प्राप्त करने हेतु ।
4. हिंदी के प्रति उनका लगाव श्रद्धा, प्रेम कितना है या हिंदी के प्रति उनके क्या विचार है जानने हेतु ।
5. राष्ट्रभाषा प्रचार हेतु उनका योगदान रहा है व्यापार के माध्यम से इसका उन्होंने प्रचार प्रसार कर हिंदी लेखन के प्रति उनका झुकाव रहा है इसलिये उनका चुनाव किया गया ।
6. सिंधी कवियों में प्रोत्साहन व उत्साह भरने हेतु ।
7. सिंधी लेखक की पीड़ा दर्द और संवेदना की अभिव्यक्ति के लिये ।

सिंधी कवियों का हिन्दी काव्य सृजन में योगदान

सारांश

हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक हिन्दी कविता ने जो चेतना समाज को दी है वह संदर्भ अलग - अलग एवं तात्कालीन होते हुए भी उसमें जीवन - मूल्यों की प्राणवता एक जैसी ही रही है । आदिकाल की कविता को आधुनिक दृष्टि से देखे तो उसमें राष्ट्रीय अस्मिता सामाजिक उदारता तथा नैतिक जीवन मूल्यों की दृढ़ता ही मूल आधार है । रसों का परिपाक एवं अलंकारों का प्रयोग भाषागत सम्प्रेषणीयता को तीव्र करने का साधन बना है ।.

हिन्दी कविता का भक्तिकाल एक नई सामाजिक क्रान्ति का काल रहा । तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों में हिन्दू एवं इस्लाम धर्मों के वैषम्य व विरोध के साथ - साथ दोनों धर्मों में निहित समाज विचारों के आधार पर एक नई समन्वयी भावना का समाज में प्रकटोकरण भक्तिकालीन कविता में हुआ है । स्वाभाविक मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील तत्कालीन कविता ने भी रसों अलंकारों के माध्यम से भाषा की संप्रेषणीयता को अंगीकार किया है ।

हिन्दी साहित्य का रीतिकाल प्रयोगवादी रहा । इस काल म श्रृंगार रस प्रधान रहा तथा आदर्श या नैतिक अवधारणा सीधे समाज के लिए कम एवं साहित्य के लिए अधिक रही । रीतिकालीन कवि ने काव्यादर्श को स्थापित करने के लिए रीतियों पद्धतियों के प्रयोग को कविता का साधन बनाया किन्तु ध्यान रखने की बात यह है कि इस काल में कविता की रीति श्रृंगार एवं वीर रस दोनों पर चली है । एक तरफ बिहारी केशवदास की श्रृंगार धारा बही तो दूसरी तरफ भूषण की वीररस धारा तथा गिरधारीदास वृन्द व वैताल की नीति धारा भी प्रवाहित हुई है ।

आदिकाल भक्तिकाल एवं रीतिकाल के हिंदी कविता को लोकादर्श, लोकधर्म एवं शास्त्रीय रीतियों से परिपूर्ण करके सभी दृष्टियों से सम्पन्न बना दिया । 19 वीं शताब्दी में इस सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी कविता में नई धारा का उदय हुआ । आधुनिक हिन्दी काव्यधारा का उत्थान तीन चरणों में हआ प्रथम चरण (भारतेन्दु युग) हिंदी खड़ी बोली में काव्य रचना एवं गद्य साहित्य की स्थापना का रहा । द्वितीय चरण (द्विवेदी युग) में हिन्दी में भाषागत परिमार्जन व विकास के साथ गद्य व काव्यगत नवीन संस्कारों को बल मिला । तीसरा चरण कविता में संस्कारो से युक्त प्रौढ़ भाषा के नवीन प्रयोगों का रहा

जिसमें छायावादी प्रयोगवादी तथा रहस्यवादी रचनाओं का सृजन हुआ और साथ ही राष्ट्रवादी व मानवतावादी जीवन मूल्यों को भी कविता ने अंगीकार कर जनमानस में संचारित किया। बीसवी सदी के चौथे दशक में हिन्दी कविता मे प्रयोगवादी प्रगतिवादी काव्य धारा प्रवाहित हुई।

आपातकाल के पश्चात हिन्दी कविता में पुन: एक मोड़ आया और आपातकालो तर कवियों ने प्रयोगवाद से लेकर नकेनवाद तक के सभी वादों का संकुचित, रूढ़िवादी एवं अवसरवादी करार देकर नकार दिया तथा अपनी रचनाओं को अकविता नाम दे डाला।

वैदिक युग से भारतीय स्वातन्त्रय संग्राम तक के सुदीर्घ काल में सिंध प्रदेश हिन्दुस्थान की अस्मिता का ध्वज वाहक ही नहीं प्रत्युत भारत की महान संस्कृति का प्राण केंद्र भी रहा है। स्नातक धर्म, संस्कृति सभ्यता और ज्ञान विज्ञान के साथ ही अत्यंत गौरवपूर्ण भारतीय वाड:मय के सृजन संचार और विकास की महागाथा सिंध में ही लिखी गई। महामनुष्यता की उद्‌गात्री सिंधु और सरस्वती के जल से पवित्र हुई सिंध की धरती को हे भारत वासियां भक्ति और श्रद्धापूर्वक प्रणाम करो।

सिंधी जाति वैदिक युग से व्यवहार कुशल वाणियां (वणिक) के उपनाम से विश्व विख्यात थी। पश्चिमी विद्वान श्री पोकाक ने लिखा था "सिंधु नदी के किनारे बसनेवाले सिंधू जब समुद्री यात्रा करनेवाले साहसी और कुशल व्यापारी थे। स्वतंत्रता संग्राम के नाम पर हुए विभाजन के बाद भी सिंधीयों ने इस व्यवसायिक कला और दानशीलता के कारण देश विदेश में धन के साथ भाव और यश कमाया था। आज सिंधु समुदाय देश भर में बिखरा हुआ है इसलिए सिंधी भाषा धीरे धीरे लुप्त होने की स्थिती में पहुंच गई है।

स्वतंत्रता मिलने के साथ ही देशवासियों को विभाजन का दंश भी सहना पड़ा। विभाजन की त्रासदी का सर्वाधिक स्वामियाजा सिंधी भाषी जनता को भुगतना पड़ा। नागपुर में जरीपटका पांचपावली खामला जैसे स्थान इनकी सफलता की गवाही देते हैं जरीपटका में अनेक शिक्षण संस्थान सिंधी भाषियों द्वारा सफलतापूर्वक चलाये जा रहे हैं।

हमारे शोध के कवि मंचीय है तथा प्राय: सभी की मौलिक रचनाएं है। प्राय: अधिकांश कवियों की कविताएं नवभारत, दैनिक भास्कर, लोकमत समाचार, पूर्णा आदि पत्र, पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। विनोदजी की "अधूरा आसमां" गजल संग्रह, डॉ जैसवानी का "एक व्यथित हृदय", 'व्यंग व्यूह है के चक्रम' काव्य संग्रह छप चुके हैं।

लघुशोध का जो उद्देश्य था वह पूर्ण सफल हुआ। अनुसंधानकर्ती ने पाया कि सिंधी कवि हिंदी काव्य सृजन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं व देते रहेंगे अन्य विधाओं में भी लिख रहे हैं। हिंदी साहित्य से जुड़े रहना व उसमें रचना करना उन्हें पसंद है। हिंदी साहित्य के प्रति उनके दिल में असीम प्रेम व आस्था है।